अनुसंधान प्रस्ताव के लिए प्रारूप पर सहायता

शोध प्रस्ताव के पूर्ण प्रारूप में निम्नलिखित विषयवस्तु /अनुभाग शामिल हैं, जो आवेदन पत्र का एक हिस्सा है और लगभग 3,000 शब्दों में है, जिसमें निम्नलिखित अनुभाग शामिल हैं:

i. शोध प्रस्ताव का शीर्षक: शोध प्रस्ताव में अध्ययन के दायरे को प्रतिबिंबित करने वाला एक स्पष्ट, सार्थक और पुष्ट विषय होना चाहिए।

ii. प्रस्तावित शोध प्रस्ताव का सार दिया जाना चाहिए (लगभग 200 शब्दों में)।

iii. प्रस्तावित अध्ययन का परिचय: परिचय में प्रासंगिक क्षेत्र में सैद्धांतिक और/या अनुभवजन्य संदर्भ के आलोक में जांच की जाने वाली शोध समस्या का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए (लगभग 400 शब्दों में)।

iv. समीक्षित प्रमुख शोध कार्य: (राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय): इस भाग में शोध के प्रस्तावित विषय से संबंधित कम से कम 15 से 20 महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध कार्यों की समीक्षा दी जानी है।(लगभग 400 शब्दों में)

v. अनुसंधान अंतराल की पहचान: अध्येता को क्षेत्र में अनुसंधान की वर्तमान स्थिति और प्रमुख निष्कर्षों का सारांश देना चाहिए, जिसमें क्षेत्र में शोधकर्ता का अपना कार्य भी शामिल है। मौजूदा अनुभवजन्य निष्कर्षों पर भी चर्चा की जा सकती है। निरीक्षण में विद्यमान निष्कर्षों या दृष्टिकोणों और इसकी प्रासंगिकता में अपर्याप्तता/अंतराल को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए (लगभग 300 शब्दों में)

vi. प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्य: अध्ययन के सामान्य उद्देश्य के साथ-साथ प्राप्त किए जाने वाले विशिष्ट उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से उल्लेख किया चाहिए । (लगभग 100-150 शब्दों में)

vii. प्रमुख शोध प्रश्न/परिकल्पनाएँ: वैचारिक ढांचे और आयाम की विशिष्टता को देखते हुए, प्रस्तावित शोध के माध्यम से उत्तर दिए जाने वाले विशिष्ट प्रश्नों को तीक्षणता से तैयार किया जाना चाहिए। व्याख्यात्मक अनुसंधान डिजाइन के मामले में, विशिष्ट परिकल्पनाओं के माध्यम से चरों का विवरण और उनके बीच संबंध प्रस्तुत करना आवश्यक है ।(लगभग 150-200 शब्दों में)

viii. अनुसंधान के लिए प्रस्तावित रूपरेखा और विधियाँ: शोधकर्ता को विस्तार से वर्णन करना चाहिए (ए) उसके अध्ययन का विषय क्षेत्र और व्याप्ति; और (बी) अनुसंधान करने के लिए पर्याप्त औचित्य के साथ दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली। कार्यप्रणाली के विवरण में अनुसंधान डिजाइन, एकत्र किए जाने वाले आंकड़े और उपयोग किए जाने वाले अनुभवजन्य और विश्लेषणात्मक विधियाँ शामिल हो सकती हैं। कार्यप्रणाली का विवरण स्पष्ट रूप से अनुसंधान के उद्देश्यों और अध्ययन के अनुसंधान प्रश्नों/परिकल्पनाओं से जुड़े होने चाहिए । (लगभग 400 में)

ix. प्रस्ताव्रत अनुसंधान का नवाचार/पथप्रदर्शक पहलू: यहां, अध्ययन में परिकल्पित दृष्टिकोण और नवीन अवधारणाओं में नवीनता को स्पष्ट करने पर व्रचार करना चाहिए । (लगभग 150-200 शब्दों में)

x. प्रस्ताव्रत समय सीमा और प्रकाशन के स्थान के साथ प्रस्ताव्रत परिणाम जैसे पत्रिकाओं में पेपर, संपादित पुस्तक/पुस्तकें, पुस्तक, नीति पत्र, दस्तावेज़, डेटासेट इत्यादि: शोध के समय और उसके पश्चात प्रकाशनों की प्रस्ताव्रत योजना पर एक संक्षप्त टिप्पणी प्रदान की जानी चाहिए, अनुभाग को पत्रिकाओं में शोध पत्रों / लेखों के रूप में प्रकाशनों के संदर्भ में अध्ययन से प्रस्ताव्रत आउटपुट को सूचीबद्ध करना चाहिए, व्रशेष रूप से स्कोपस /यूजीसी की देखभाल-सूचीबद्ध पत्रिकाओं, पुस्तकों, मोनोग्राफ, आदि। (लगभग 300 शब्दों में)

xi. जहां आंकड़ों की कमी महसूस हो वहाँ नवीन आंकड़े तैयार क्रिया जाना चाहिए: मौजूदा आंकड़ों में पाई गई कम्रियों/अपर्याप्तताओं पर एक टिप्पणी और प्रस्ताव्रत शोध के ल्रिए तैयार क्रिए जाने वाले नवीन आंकड़ों का व्रवरण । (लगभग 100-150 शब्दों में)

xii. नीति निर्माण के ल्रिए प्रस्ताव्रत अध्ययन की प्रासंग्राकता: इस व्रषय पर व्रसद्धांत और कार्यप्रणाली के साथ-साथ नीति निर्माण में अपेक्षत अनुसंधान कार्य के महत्वपूर्ण योगदान पर एक संक्षप्त जानकारी दी जानी चाहिए । (लगभग 150 शब्दों में)

xiii. समाज के ल्रिए प्रस्ताव्रत अध्ययन की प्रासंग्राकता: शोध कार्य से समाज में अपेक्षत महत्वपूर्ण योगदान के बारे में संक्षप्त जानकारी दी जानी चाहिए । (लगभग 200 शब्दों में)

xiv. प्रत्येक क्रम्रक तिमाही के ल्रिए अध्ययन के ल्रिए माइलस्टोन निर्धारित क्रिया गया है: फेलोश्राप अनुसंधान कार्य को समय पर पूरा करने के ल्रिए फेलोश्राप के दौरान एक त्रैमास्रिक समयरेखा दी जानी है। अंतिम रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने के ल्रिए प्रत्येक तिमाही में क्रम्रक और उसके पूरा होने के ल्रिए समय-सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। (लगभग 100 शब्दों में)